डॉ. सौ. रुख़साना रज़्ज़ाक मुल्ला
एम्. ए., पीएच्. डी. (हिंदी)
अध्यक्षा, हिंदी विभाग,
दहिवडी कॉलेज, दहिवडी,
जि. सातारा (महाराष्ट्र)
पूर्व सदस्या, हिंदी अध्ययन मंडल
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करती हूँ कि **श्री. दादासो सदाशिव कोळपे** ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए **"जीवनीपरक उपन्यास 'विवेकानन्द': एक अध्ययन"** शीर्षक से प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ संपन्न किया है। इसमें शोध-छात्र ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है। जो तथ्य लघु-शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए है, मेरी जानकारी के अनुसार सही है। शोध-छात्र के कार्य से मैं पूर्णतः संतुष्ट हूँ। अतः इसे परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय में एम्. फिल्. उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध-निर्देशिका
डॉ. सौ. रुख़साना रज़्ज़ाक मुल्ला

स्थान : सातारा
तिथि : 30 जुलाई 2013

प्रख्यापन

मैं दादासो सदाशिव कोळपे प्रख्यापित करता हूँ कि **"जीवनीपरक उपन्यास 'विवेकानन्द' : एक अध्ययन"** यह लघु-शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्. फिल्. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या किसी अन्य विश्वविद्यालय में एम्. फिल्. उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध-छात्र
श्री. दादासो सदाशिव कोळपे

स्थान : सातारा

तिथि : 30 जुलाई 2013

प्राक्कथन

आदमी हमेशा से वैसा नहीं रहा है, जैसा वो आज है। उसने विचारों के सहारे अपने में हर युग में समयानुसार परिवर्तन किया। वह हर चीज एवं व्यवस्था को अपनी क्षमताओं द्वारा जरूरत के अनुसार ढालता गया। उसी से वह अपने जीवन को गतिशील बनाता रहा है। उस की खोज-अनुसंधान की आंतरिक प्रेरणा एवं बुद्धि ने ही मानवीय दुनिया निर्माण की है। इस प्रक्रिया के चलते वो जंगली जीवन से मानवीय जीवन की ओर बढ़ता गया और सामाजिक जीवन का विस्तार हुआ।

सामाजिक जीवन में एक विशिष्ट जीवन पद्धति का इजाद हुआ। उसमें जीविकोपार्जन के साथ मानव जीवन को परिमार्जित करने की प्रक्रिया में शिल्पकला, चित्रकला, भाषा, साहित्य आदि अंगों का निर्माण हुआ। साहित्य और समाज का संबंध परस्परपूरक है। साहित्य मानव के अभिव्यक्ति क्षेत्र का एक प्रमुख अंग है। साथ ही मानव के विकास का परिचय भी साहित्य द्वारा मिलता है। विज्ञान की प्रगति ने भी इसमें अग्रणी भूमिका निभाई और मानव के अभिव्यक्ति को मुद्रित साहित्य द्वारा प्रबल वाणी मिली। उसके विचारों, भावों का संकलन शब्दों के माध्यम से साहित्यिक रूप में उभरकर व्यक्त होने लगा। इसी से साहित्य की विधाओं का निर्माण हुआ। आज साहित्य में काव्य, नाटक, निबंध, उपन्यास, संस्मरण, कहानी, रेखाचित्र आदि अनेक विधाएँ चल पड़ी हैं।

साहित्य संस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण अंग होने के साथ वह संस्कृति निर्माणक एवं नियामक की भूमिका भी अदा करता है। साहित्य मानव की विकास परम्परा को देखने का साधन भी है। मनुष्य मनोरंजन, ज्ञानसाधना एवं आत्माभिव्यक्ति के लिए साहित्य की निर्मिति करता है। मानव के विचारों की दुनिया का दृश्यरूप साहित्य है।

भारत विविधतापूर्ण संस्कृतियों का एक अनोखा देश है। उसमें अनेक धर्म, जात, भाषा, संप्रदाय एवं परंपरावाले लोग अपना जीवनयापन कर रहे हैं। यहाँ की हर भाषा में साहित्य की समृद्ध एवं विकासशील परंपरा देखी जाती है। इसी कड़ी में हिंदी भाषा का साहित्य आता हैं। हिंदी भाषा के उद्भव से आज तक उसमें विविधतापूर्ण साहित्य का निर्माण हुआ हैं। यह साहित्य मानव समाज के हर क्षेत्र से संबंधित हैं। हिंदी के विभिन्न साहित्यिकों

ने अपनी सृजनाशालाओं में समाज के यथार्थ चित्रण को प्राथमिकता दी हैं। हिंदी साहित्य समाज व संस्कृति को आपस में जोड़े रखने का काम हमेशा से करता रहा हैं। हिंदी साहित्य में धर्म, संस्कृति और मानव मूल्यों का जो सिलसिला कबीरकाल से शुरू हुआ वह आज के उत्तर आधुनिक कहलानेवाले युग तक अबाध रूप से चलता आ रहा हैं।

मानव अन्य प्राणियों की तरह केवल जिविकोपार्जन से जीवन का सफर तय नहीं करता, उसे अपने तथा प्रकृति के संबंध में अनेक प्रश्न कुरेदते रहते हैं। इन्हीं सवालों के जवाब ढूँढकर जब वह अपने आपको जवाब देने लगता है, तब 'दर्शन' का आरंभ होता है। हिंदी के अनेक साहित्यकारों ने धर्म, दर्शन एवं जीवनमूल्यों को समाजमन में चेताने का कार्य किया हैं। कबीर, तुलसी, सूरदास, मीरा से लेकर प्रेमचंद, प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, निराला, यशपाल, कमलेश्वर, डॉ. भटनागर आदि कई साहित्यिकों के नाम इसमें गिनाये जा सकते हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी साहित्य में अनेक बदलाव आए। भारतीय समाज एवं साहित्य पर पाश्चात्य सभ्यता का गहरा प्रभाव पड़ा। मानवमूल्यों में तेजी से परिवर्तन होने लगा। इस परिवर्तन से एक ओर हम तांत्रिक, भौतिक, आर्थिक धरातल पर नवोदित सूर्यसमान चमकने लगे वही दूसरी ओर हम आत्मबोधरहित और मूल्यविहीन अवस्था को प्राप्त हुए। इसी वजह से भारत विश्व में अपनी परंपरागत सर्वश्रेष्ठ पहचान खोता जा रहा हैं। ऐसे समय अनेक साहित्यकार भारत को विश्वगुरू बनाएँ रखनेवाले गुणों को अतित की गौरवशाली परंपरा के सहारे अपने साहित्य से समाज में संप्रेषित किए जा रहे हैं। आदमी को आदमी की पहचान से जोड़नेवाली इस साहित्यिक परंपरा में डॉ. राजेंद्र मोहन भटनागर जी का नाम प्रमुखता से लिया जाता हैं। उन्होंने अपने साहित्य में न केवल समाज की सद्यावस्था एवं कठिण, दुर्धर प्रश्नों को उपस्थित किया हैं; बल्कि उनके उपायों की भी सही मायने में पेशकश की हैं। उन्होंने अपने जीवनीपरक उपन्यासों द्वारा महानतम् आदर्शों की स्थापना से मानव को अपने जीवन की हर कठिन परिस्थिति से सामना करने के लिए सामर्थ्यवान बनाने का प्रयास किया हैं। उसे अपनी आत्मशक्ति से जोड़ा है।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

✱ प्रेरणा एवं विषय-चयन :

हिंदी के प्रति मेरा रूझान हायस्कूल के जीवन से रहा है। एम्. ए. की पढ़ाई के दौरान कुछ उपन्यासों को पढ़ा था, जिससे मेरा मन उपन्यास विधा की ओर आकर्षित हुआ। एम्. फिल्. को प्रवेश लेने के बाद लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के ग्रंथालय से डॉ. भटनागरजी का उपन्यास 'विवेकानन्द' को पढ़ा। इसके प्रथम वाचन ने मुझे इतना अभिभूत किया कि जैसे ही मौका मिला मैंने इस उपन्यास की एक प्रत खरीदकर अपने पास रख लीं। जब मन करता है, तब इस उपन्यास के कुछ प्रसंगों को पढ़ता रहता हूँ। मुझे आध्यात्मिक क्षेत्र में रूचि है। आध्यात्मिक प्रकार की अनेक पुस्तकें मेरे पास संग्रहित हैं। विवेकानंद के चरित्र में मेरी दिलचस्पी इसी वजह से है। अतः जब एम्. फिल्. के लघु शोध-प्रबंध के विषय चयन का प्रसंग उपस्थित हुआ, तो सबसे पहले यही पुस्तक मेरे सामने उपस्थित हुई। इस विषय के संदर्भ में मैंने मेरी शोध-निर्देशिका डॉ. आर. आर. मुल्ला मॅडम जी से गहरा विचार-विमर्श किया। उनकी प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से मैंने प्रस्तुत विषय पर शोध-कार्य करने का फैसला लिया।

अतः प्रस्तुत उपन्यास पर विचार-विमर्श करते हुए मैंने ''जीवनीपरक उपन्यास 'विवेकानन्द' : एक अध्ययन'' यह विषय निश्चित किया।

✱ विषय का महत्त्व :

'हिंदी उपन्यास विधा' हिंदी को साहित्य आधुनिक युग की श्रेष्ठतम् देन है। उपन्यास साहित्य के अंतर्गत 'जीवनीपरक उपन्यास विधा' स्वतंत्र रूप में उभर रही है। डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर जी ने अतित एवं वर्तमान के अनेक प्रसिद्ध व्यक्तियों पर जीवनीपरक उपन्यास लिखे हैं। जिनमें सूरदास, मीराबाई, महाराणा प्रताप, नेताजी, विवेकानंद, जिन्ना अली, आंबेडकर, इंदिरा गांधी, राममनोहर लोहिया, सोनिया गांधी आदि कई नाम बताए जा सकते हैं। उनकी यह कृतियाँ जीवनीपरक उपन्यासों की शृंखला में विशेष महत्त्व रखती हैं। 'जीवनीपरक उपन्यास विधा' को स्वतंत्र विधा के रूप में प्रमाणित करने में डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर जी का सर्वश्रेष्ठ योगदान मिल रहा हैं।

डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर जी ने अपने अनेक जीवनीपरक उपन्यासों द्वारा प्रसिद्ध एवं महान व्यक्तियों के अमर व्यक्तित्त्वों तथा जीवन-संदेश को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया है। लेखक ने अपना 'विवेकानन्द' उपन्यास 'भारतीय नवजागरण के अग्रदूत', 'स्वामी विवेकानंद' के जीवन-चरित्र को लेकर लिखा है। उसमें लेखक ने स्वामीजी के व्यक्तित्त्व के हर एक पहलू को प्रकाश में लाने का प्रयास किया हैं। उन्होंने स्वामीजी के चरित्र-चित्रण के माध्यम से एक परिपूर्ण आदर्श की प्रस्तुति की है।

आज समाज में अर्थ और राजनीति का प्रभाव बढ़ रहा है। मानव विकास को भौतिक विकास के संकुचित घेरे में देखा जा रहा है। इसी कारणवश, समाज में खोखलापन एवं दिखावे की प्रवृत्ति बढ़ी है। मानव दिशाहीन होकर आत्मविवंचना एवं निराशा के गर्त में जा पड़ा है। ऐसे समय उसे सर्वांगिण विकास का मार्ग दिखाकर उसमें नवजागृति लाने का कार्य डॉ. भटनागर जी ने अपने लेखन द्वारा किया हैं। स्वामीजी के चरित्र-चित्रण से उन्होंने समाज में निर्माण हुई अशांति, निराशा को दूर करने का सफल प्रयास किया हैं।

स्वामीजी का जीवन-चरित्र और जीवन संदेश आज भी मानव को सर्वहीत में अग्रसर होनेवाली नई राह दिखाने में समर्थ है। भारतीय समाज में जागृती लाने व उसे भारतीयत्व से जोड़ने के लिए स्वामीजी के विचार सर्वश्रेष्ठ भूमिका निभा सकते हैं। इस दृष्टि से प्रस्तुत जीवनीपरक उपन्यास की आलोचना / समीक्षा करना महत्त्वपूर्ण है।

❋ शोध-विषय का उद्देश्य :

लेखक राजेंद्रमोहन भटनागर जी एक ऐतिहासिक एवं जीवनीपरक उपन्यासकार हैं। वे अपने जीवनीपरक उपन्यासों के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। आपकी लेखन साधना का सहज ही स्वतंत्र विकास हुआ है। 'विवेकानन्द' उपन्यास में जीवनमूल्य, संस्कृति, धर्म, दार्शनिकता आदि की दृष्टि से स्वामी जी के जीवन को चित्रित करने का प्रयास हुआ है। लेखक के उपर्युक्त मानवीय कार्य को विश्लेषित करना ही प्रस्तुत शोध विषय चुनने की वजह बन गया।

'विवेकानन्द' उपन्यास में जीवनमूल्य, संस्कृति एवं आध्यात्मिक जीवनदृष्टियों का सहज एवं सुखद समन्वय हुआ हैं। साथ ही इसमें सामाजिक एवं धार्मिक चेतना, मानवतावादी विचारधारा, राष्ट्रीय भावना तथा समन्वयात्मक भावना नजर आती हैं। अतः 'विवेकानंद' उपन्यास का सखोल अध्ययन करके उसमें निहित विभिन्न पहलुओं का विवेचन-विश्लेषण करना ही मेरे शोध-विषय का मूल उद्देश्य है।

आज तक प्रस्तुत विषय को लेकर किसी ने भी शोध-कार्य नहीं किया। प्रस्तुत अभाव की पूर्ति करना भी मेरे शोध-विषय का उद्देश्य है।

❋ शोध विषय की सीमा और व्याप्ति :

वस्तुतः शोध-कार्य गहन समीक्षा का विषय है। इसमें परिश्रम के साथ-साथ सुनियोजन एवं प्रभावी दिशा निर्देशन की आवश्यकता होती है। तभी शोध-कार्य सुचारू रूप से संपन्न हो सकता है। मेरी समीक्षा का विषय डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर जी का जीवनीपरक उपन्यास 'विवेकानन्द' है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को छः अध्यायों में विभाजित किया है।

❋ प्रथम अध्याय : हिंदी के जीवनीपरक उपन्यास : स्वरूप और विवेचन :

जीवनीपरक उपन्यास विधा आधुनिक हिंदी साहित्य में एक नव्यतम विधा के रूप में चल पड़ी है। इसका उद्भव और विकास ऐतिहासिक एवं चरित्रप्रधान उपन्यास साहित्य और जीवनी साहित्य के आधार पर हुआ है। इस अध्याय में यथोचित संदर्भों के साथ जीवनीपरक उपन्यास के स्वरूप, तत्त्व और उद्भावना एवं विकास का विवेचन है। साथ ही हिंदी के महत्त्वपूर्ण जीवनीपरक उपन्यासों का विश्लेषण किया गया हैं। अंत में निष्कर्ष दिया गया है।

❋ द्वितीय अध्याय : जीवनीपरक उपन्यासकार 'डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर' : व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व :

साहित्य में उसके रचेता के भाव-विचार, जीवनशैली और बाह्य वातावरण का विशेष प्रभाव देखा जाता है। इसी तरह साहित्यकार के व्यक्तित्त्व की झलक उसके सृजनात्मक कार्य में दिखाई पड़ती हैं। अतः साहित्यकार का साहित्य पूर्णतः से जानने के लिए उसके व्यक्तित्त्व को देखना जरूरी है। इस अध्याय में डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर जी का जन्म, बचपन, माता-

पिता, घर-परिवार, शिक्षा, नौकरियाँ, विवाह संबंधी जानकारी दी गई हैं। उनके व्यक्तित्त्व की विशेषताओं को भी संक्षेप में दर्शाया गया हैं।

साथ ही इसमें डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर जी के कृतित्त्व का समग्र परिचय दिया गया हैं। वे एक उपन्यासकार, नाटककार, कहानीकार एवं विचारक के रूप में प्रस्थापित हैं। अतः उनके उपर्युक्त पहलुओं को विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। साथ में उन्हें प्राप्त सम्मान एवं पुरस्कारों की जानकारी दी गई हैं। अंत में निष्कर्ष दिया गया है।

✱ तृतीय अध्याय : जीवनीपरक उपन्यास 'विवेकानन्द' की कथावस्तु :

उपन्यास विश्व साहित्य में सर्वाधिक लोकप्रिय एवं बहुचर्चित विधा है। वह कथा साहित्य का नव्यतम रूप है। कहानी सुनने-सुनाने का काम पूर्वापार से होता रहा है। अतः इसके प्रति समाज के हर वर्ग में आकर्षण-लालसा दिखाई देती है। इस अध्याय में कथावस्तु के अर्थ एवं परिभाषा और प्रकारों का संक्षेप में विश्लेषण करते हुए 'विवेकानन्द' उपन्यास की कथावस्तु बताई गई है। अंत में निष्कर्ष दिया गया है।

✱ चतुर्थ अध्याय : जीवनीपरक उपन्यास 'विवेकानन्द' में जीवनमूल्य :

'स्वामी विवेकानन्द' का जीवन मानवीय मूल्यों का खजाना है। उनके चरित्र में हर वो मूल्य मिलता है, जो आदमी को पशु से मानव और मानव से ईश्वर तत्त्व में ढ़ाल सकें। अतः मैंने 'विवेकानन्द' उपन्यास का प्रस्तुत रूप में अध्ययन करने का निश्चय किया। इस अध्याय में जीवनमूल्यों के स्वरूप, व्याप्ति और आवश्यकतओं को दर्शाया गया है। साथ ही 'विवेकानन्द' उपन्यास में आए जीवनमूल्यों का विवेचन-विश्लेषण किया गया है। अंत में निष्कर्ष दिया गया है।

✱ पंचम अध्याय : जीवनीपरक उपन्यास 'विवेकानन्द' में संस्कृति दर्शन :

'स्वामी विवेकानन्द' सांस्कृतिक क्षेत्र के एक प्रभावशाली व्यक्ति थे। अतः उनकी जीवन यात्रा में पग-पग पर संस्कृति के दर्शन मिलते है। इस अध्याय में संस्कृति के स्वरूप एवं व्याप्ति को विश्लेषित करते हुए संस्कृति के महत्त्व को विशद करने का प्रयास किया गया है। साथ में 'विवेकानन्द' उपन्यास में चित्रित संस्कृति का विवेचन-विश्लेषण किया गया है। अंत में निष्कर्ष दिया गया है।

✱ षष्ठ अध्याय : जीवनीपरक उपन्यास 'विवेकानन्द' में दार्शनिकता :

भारत को विश्व के 'आध्यात्मिक गुरू' के रूप में देखा जाता है। 'स्वामी विवेकानन्द' विश्व को समन्वयवादी विचारधारा से जोड़नेवाले इसी कड़ी के महान दार्शनिक थे। अत: इस अध्याय में दार्शनिकता के स्वरूप एवं महत्त्व को बताते हुए आलोच्य कृति में उल्लेखित दार्शनिकता का विवेचन विश्लेषण किया गया है। अंत में निष्कर्ष दिया गया है।

✱ उपसंहार :

उपसंहार में शोधकार्य का सारांश दिया गया है। अंतत: सभी अध्यायों में किए गए विश्लेषण द्वारा प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर शोधकार्य की प्रमुख उपलब्धियाँ बताई गई हैं।

✱ संदर्भ ग्रंथ सूची :

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध के लेखन कार्य में सहायक आधार ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथ, शब्दकोश तथा पत्र-पत्रिकाओं की सूचि इसके अंतर्गत दी गई है।

✱ प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध की मौलिकता :

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध की मौलिकता के संदर्भ में निम्न बातें बताई जा सकती हैं-

1. डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर के 'विवेकानन्द' उपन्यास पर ''जीवनीपरक उपन्यास 'विवेकानन्द' : एक अध्ययन'' इस विषय से किया गया अनुसंधान पूर्णत: मौलिक है; क्योंकि मेरी अल्पमति के अनुसार यह विषय अछूता ही था।
2. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध द्वारा मैंने आलोच्य कृति के तात्विक विवेचन के बजाय लेखकीय मंतव्य को, उद्देश्य को विश्लेषित करने का प्रयास किया है, जो अपने आप में मौलिकता का बोध करता है।
3. डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर जी के 'विवेकानन्द' उपन्यास में अभिव्यक्त हुए तत्कालिन जीवनमूल्य, संस्कृति एवं दर्शन संबंधी विचारों को आज के समय के परिप्रेक्ष्य में विवेचित करने का यह विनम्र प्रयास किया है।

✱ अनुसंधान की पद्धतियाँ :

प्रस्तुत शोध-कार्य के दरम्यान अनुसंधान की निम्नांकित पद्धतियों का यथासंभव उपयोग किया गया है।

1) विवेचन-विश्लेषण पद्धति

2) व्याख्यात्मक पद्धति

3) साक्षात्कार पद्धति

4) वर्णनात्मक पद्धति

✱ शोध-अध्ययन की नई दिशाएँ :

इस विषय के संदर्भ में शोध-कार्य के लिए संभावित विषय निम्नलिखित हैं -

1. भारतीय नवजागरण में विवेकानन्द का योगदान।
2. स्वामी विवेकानन्द का हिंदी साहित्य पर प्रभाव।
3. हिंदी के जीवनीपरक उपन्यासों में जीवनमूल्य।
4. डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर जी के जीवनीपरक उपन्यासों में आधुनिक भावबोध।
5. डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर जी के जीवनीपरक उपन्यासों का तात्त्विक अनुशीलन।
6. डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर : व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व।

ऋणनिर्देश

व्यक्ति और समाज का अभिन्न नाता होता है। समाज व्यक्ति के अस्तित्त्व का आधार है तो व्यक्ति समाज के विकास की महत्त्वपूर्ण ईकाई है। इस विकास की प्रक्रिया में प्रत्येक व्यक्ति अलग-अलग भूमिका निभाता है। अतः उसके हर एक कार्य में जो भी गुणतत्त्व मिलते है उनकी उपज समाज से ही होती हैं। समाज से मिलनेवाले विचार एवं संस्कारों से व्यक्ति में समाज के प्रति उत्तरदायित्त्व की भावना उभरती है। साहित्य एक साथ समाज का आईना एवं उपदेशकर्ता की भूमिका निभाता है। समाज का ही एक हिस्सा होनेवाला लेखक समाज का अवलोकन करता रहता है। समाज में उत्पन्न अच्छाईयाँ उसे पसंद आती है और बुराईयाँ व्यथित करती हैं। इसी अच्छे-बुरे स्थितियों का चित्रण करते हुए वह समाजमन को सही दिशा देने का प्रयास करता है।

साहित्यकार अक्सर समाज की समस्याओं को उकेरते हैं, उससे मन अशांत हो उठता है, लेकिन डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर जी अपने तरीके से समाधान भी देते हैं। वे हर सामाजिक बुराईयों एवं समस्याओं से निपटने के लिए उपाय ढूँढ लेते हैं। इसी के चलते उन्होंने अपने साहित्य सृजन के माध्यम से अनेक युगादर्श व्यक्तित्त्वों को आधुनिक भावबोध के रूप में उजागर किया हैं। आलोच्य कृति को पढ़ने के बाद मुझे महसूस हुआ कि आधुनिक युग की अनेक गंभीर समस्याओं से निपटने के लिए आदमी को निडर, साहसी, आंतरिक रूप से मजबूत बनाने एवं आत्मप्रेरणा प्रदान करने के उद्देश्य से लेखक ने 'स्वामी विवेकानन्द' का चरित्र-चित्रण किया हैं। व्यक्ति के सर्वांगिण विकास में सहायक जीवनमूल्य, समाज के सर्वहीत में उद्युक्त संस्कृति और विश्वकल्याणकारी समन्वयात्मक दार्शनिक विचारधारा आदि ने मुझे अत्यंत प्रभावित किया। इसी प्रभाव के परिणाम स्वरूप मैंने एम्. फिल्. लघु-शोध-प्रबंध के लिए ''जीवनीपरक उपन्यास 'विवेकानन्द' : एक अध्ययन'' यह विषय सुनिश्चित किया।

कोई भी इन्सान अपने जीवन में किसी भी तरह का कार्य बिना किसी की सहायता के करें, यह संभव नहीं है। वह जन्म से मृत्यू तक अपने आसपास के वातावरण, प्रकृति और समाज के हर एक अंग से संस्कार, विचार एवं ऊर्जा ग्रहण करता है।यही वे गुणतत्त्व हैं जो उसके प्रत्येक कार्य को सही अंजाम देते है। जब हम धन्यवाद देते हैं तो उस कार्य का सर्किट

(चक्र) पूर्ण होकर व्यक्ति अपने आत्मानंद को अनुभव कर पाता है। अत: मैं अपने इस शोध-कार्य को सफल बनाने में मदद करनेवाले सज्जनों के प्रति धन्यवाद प्रकट करना अपना परम कर्तव्य समझता हूँ।

प्रस्तुत शोध-कार्य का अध्ययन-लेखन मैंने श्रद्धेय गुरूवर्या डॉ. सौ. रुख़साना रज़्ज़ाक मुल्ला मॅडम जी के अमूल्य निर्देशन में किया है। कबीर गुरू के महत्त्व को बताते हुए कहते हैं-

"कुमति कीच चेला भरा, गुरू ज्ञान जल होय
जनम जनम का मोरचा, पल में डारे धोय।"

इस शोध कार्य के काल में मुझ में जागृत हुई सद्बुद्धि को मैं अपने लिए श्रद्धेय गुरूवर्या का अनमोल उपहार स्वरूप मानता हूँ। इस शोध-यात्रा के दरम्यान आर्थिक विवंचनाओं से घिरकर कई बार मैंने अपने आप को निराशा एवं द्वंदव से घिरा हुआ पाया। ऐसे समय श्रद्धेय गुरूवर्या के स्फूर्तिदायी एवं प्रेरणाभरे शब्दों से मुझमें हौसला जगा और मैं इस कार्य को यथायोग्य रूप में पूर्ण कर सका। अत: ऐसे गुरू की प्राप्ति से मैं अपने को धन्य समझता हूँ और उनके प्रति अपना अनन्य धन्यवाद प्रकट करता हूँ।

प्रस्तुत शोध-विषय के चयन के उपरांत मैंने गुरूवर्या डॉ. मुल्ला मॅडम जी के मार्गदर्शन से राजस्थान की यात्रा की। वहाँ के अत्यंत सुंदर एवं विलोभनीय शहर उदयपुर में डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर जी के साथ तीन दिन बिताए। इस का प्रमुख हेतु था कि उनके व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व की जानकारी ली जाए। मेरा यह हेतू तो पूर्ण रूप से सफल हुआ ही मगर उसी के साथ डॉ. भटनागर जी के सहवास से मैंने अपने में एक सुखद बदलाव महसूस किया। डॉ. भटनागर जी जीवन के इतने ऊँचे मुकाम पर पहुँचने के बाद भी वें जिस सादगी, सेवाभावना, सहजता एवं सरलता से अपना जीवनयापन कर रहे हैं, उसे देख-समझकर मेरे विचारों एवं जीवन दृष्टिकोन में आमूल परिवर्तन आया। कबीर कहते हैं,

"सन्त सुरसरी गंग जल, आनि पखारा अंग।
मैल से निरमल भये, साधु जन के संग।"

यही से मेरी हिंदी साहित्य के प्रति रूचि बढ़ती गई। ऐसे महान व्यक्ति के प्रति आभार व्यक्त करने के शुभ अवसर मैं कैसे चूँक सकता हूँ? अत: मैं उनको तहेदिल से धन्यवाद देता हूँ।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की हिंदी विभागाध्यक्षा डॉ. पद्मा पाटील मॅडमजी ने समय-समय पर अपने मार्गदर्शन से लाभान्वित किया है। उनके प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के हिंदी विभाग के आदरणीय गुरूजन डॉ. बी. डी. सगरे जी और प्रा. जे. आर. जाधव जी, इन दोनों ने भी समय-समय पर अपने सद्मार्गदर्शन से मुझे लाभान्वित किया, अत: मैं इन गुरूजनों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ। साथ ही इसी महाविद्यालय के आदरणीय प्राचार्य डॉ. आर. व्ही. शेजवळ, और ग्रंथपाल महोदय, दहिवडी कॉलेज, दहिवडी के प्राचार्य एवं ग्रंथपाल महोदय इन सभी का हृदय से आभारी हूँ।

प्रस्तुत शोध-कार्य में मैं जिन ग्रंथों से लाभान्वित हुआ, उन तमाम लेखक-लेखिकाओं के प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा के श्री. मुकुंद ढवले जी और राजू कुलकर्णी जी ने अपने तांत्रिक मार्गदर्शन के साथ अत्यंत सहृदयता एवं तत्परता से टंकलेखन का काम किया है। मैं उनको हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

मेरे जीवन में हर तरह से आर्थिक सहयोग एवं मानसिक आधार के लिए मेरे जन्म से लेकर आज तक मेरे परिवार के सदस्यों के सहयोग को भूलना मेरे लिए असंभव बात हैं। मेरी माँ और पिताजी की मृत्यू मेरे बचपन में ही हुई थी। उनके बाद मेरे पितासमान भाई एवं भाभी माँ ने जिस आत्मीयता से मुझे सँभाला है, उससे मुझे जीवन के किसी भी क्षण में माता-पिता की कमी का एहसास नहीं हुआ। इन परिजनों के प्रति आभार व्यक्त करके मैं उनके ऋण से इस जन्म में तो मुक्त नहीं हो सकता। उनके इसी बर्ताव के प्रतिक्रिया के रूप में मुझमें उनके प्रति जो उत्तरदायित्व की भावना प्रबल है, वही मेरे सारे अच्छे कार्यों में प्रेरणास्वरूप विद्यमान हैं। इन्हीं की तरह मेरे अनेक सहृदय मित्र, पड़ोसी एवं आप्तजनों की सहायता एवं प्रेरणात्मक बल से मुझे हर कठिनाई से दो हाथ करने का सामर्थ्य मिला है। अत: मैं इन सभी को धन्यवाद देता हूँ। मैं ईश्वर के प्रति हृदय से आस्था रखता हूँ। इस विश्व में मैं मानव जन्म को सबसे बड़ा सुअवसर मानता हूँ, अपने आप को जानने का, आत्मानुभव और आत्मानंद प्राप्त करने का। अत: इस जन्म के लिए मैं ईश्वर को हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

मैंने अपनी अल्पमति से आलोच्य कृति का पूर्ण तटस्थता तथा सहृदयता से विवेचन विश्लेषण करने का प्रयास किया है। मेरे इस लघु प्रयास की ओर विद्वत्तजन उदारता की दृष्टि से देखेंगे, ऐसी मैं उम्मीद करता हूँ।

शोध-छात्र
श्री. दादासो सदाशिव कोळपे

स्थान : सातारा

तिथि : जुलाई 2013